ईश्वर से क्या मांगे और क्या न मांगे ? ईश्वर की इच्छा में ही सदा प्रसन्न रहें.

“वादए वस्ल चूं शबद नज़दीक ! आतिशे शौक़ तेज़ तर गरदद !! जितनी माशूक़ (प्रियतम) के मिलने की घड़ी नज़दीक आती जाती है, उतना ही मिलने का शौक़ तेज़ होता जाता है. यानी जितनी मौत की घडी नज़दीक आती जाती है उतना ही आनंद आता जाता है और बड़ी ख़ुशी होती है की कब मरूं और प्रियतम में समां जाऊं. मगर यह हालत किसकी है? उसकी जिसने अपनी आत्मा को ईश्वर में मिला दिया है और दुनिया को बुद्धि से भोग रहा है. उसका लगाव (attachment) ईश्वर से है. वह अपने संस्कार भी भोगता है और परमार्थ भी बना लेता है. वह मरते वक्त रोता हुआ नहीं जाता और फिर वापस भी नहीं आता क्योकि यहाँ इस दुनिया में उसका किसी से लगाव ही नहीं है

हमें अपने स्थूल शरीर पर जो दुःख-सुख अनुभव होता है वह हमें अपनी सुरत के द्वारा होता है. हमें चोट लगी, बड़ा दुःख हुआ. लेकिन यदि आपको सुरत का अभ्यास आता है, यानी आपने अपनी सुरत को नीचे से ऊपर ले जाने का अभ्यास कर रखा है, तो आप उस समय मन के स्थान (mental plane) पर आ जाईये, यानी अपने को स्थूल शरीर (physical plane) से ऊपर उठा लीजिये तो आपको वह कष्ट अनुभव नहीं होगा. इसे करके देख लीजिये.

इसको यों समझ लीजिये कि आपको जिस चीज़ में आनंद मिलता है, जेसे ताश, शतरंज या आपके किसी दोस्त की सौहबत, उसमें अपनी सुरत (attention) को जोड़ दीजिये. जब आपका ध्यान पूरी तरह से उस खेल या उस दोस्त में लग जायेगा तो आपको चोट का दर्द मालुम नहीं होगा या बहुत कम मालुम होगा. दर्द कहाँ मालुम होता है, जहाँ आपकी सुरत होती है. इसी तरह आपको कोई सदमा पहुंचा यानी कोई दोस्त मर गया या कोई सगा-सम्बन्धी मर गया या कोई मानसिक आघात (mental shock) पहुंचा तो उसे हटाने के लिए जो अभ्यास अपने सत्संग में सीखा है, उसके द्वारा अपनी सुरत को आत्मा के स्थान (spiritual plane) पर ले आइये. मन (mental plane) में दुःख नहीं होगा और यदि होगा भी तो बहुत हल्का सा होगा. तो हमने कर्म तो भोगा, जैसा हमने किया वैसा हमें मिला, लेकिन बेमालूम .

दरअसल जो ऊंचे अभ्यासी हैं वे कष्ट तो भोगते ही हैं लेकिन उस कष्ट का अनुभव अपने शरीर और मन पर उतना नहीं होने देते जितना साधारण मनुष्य को होता है. हमारे ही यहाँ एक सज्जन ऊंचे अभ्यासी थे

जिनकी किसी चीज़ का ऑपरेशन होने वाला था. उनको chloroform (बेहोश करने की दवा) दी जाने लगी तो उन्होंने डाक्टरों से कहा कि -

" साहब आप मुझे बेहोशी की दवा मत दीजिये. मैं थोड़ी देर concentrate (सुरत को एकाग्र करके ऊपर चढ़ा लूं) और जब मेरे शरीर में अमुक लक्षण पैदा हो जाएँ तब आप मेरा ऑपरेशन कर दीजिए. तो वे अपनी सुरत को mental plane से ऊंचा उठाकर कर spiritual plane पर ले गए यानी उन्होंने अपनी सुरत को आत्मा में जोड़ दिया. जब डाक्टरों ने उनके बताये हुए लक्षण उनके शरीर में प्रकट देखे तो उनका ऑपरेशन कर दिया गया और उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ.

यह नित्य प्रति की बातों में भी अनुभव होता है. हमें स्वयं कई बार अनुभव हुआ है. मोटर से उतरे हैं और पैर में कोई लोहे का टुकड़ा चुभ गया . कुछ ऐसा लगा कि चींटी सी चल रहीं है. घर जाकर देखा तो खाल फट गयी थी और खून बह रहा था. जहाँ दर्द ज़्यादा हुआ वहां अपनी सुरत को गुरुदेव के चरणों में, ईश्वर के चरणों में लगा दिया, दर्द महसूस भी नहीं हुआ. तो क्या दर्द थोड़े ही चला गया? दर्द तो दर्द वाली जगह ही रहा लेकिन जिस चीज़ के द्वारा, यानी सुरत के द्वारा वह दर्द अनुभव हो रहा था उसे उस जगह से हटा कर मन के स्थान पर ले गए और वहां से उठाकर आत्मा के स्थान पर ले गए. इसी तरह के अभ्यास के द्वारा मनुष्य दुनियां के दुखों से, चाहे वह शारीरिक कष्ट हो या मानसिक, विचलित नहीं होता.

हमारे जो पिछले कर्म हैं उनमें से कुछ हिस्सा हमें इस जीवन में मिलता है वही fate (तक़दीर) या प्रारब्ध कहलाता है. उसे हम यहाँ भोगते हैं और जो शेष रह जाते हैं, उन्हें संचित कर्म कहते हैं जो हमें भविष्य में भुगतने हैं, क्योकि एक ही जीवन में हमारे सब पिछले कर्म कट नहीं पाते हैं. जितने कर्म कटने हैं कट जाते हैं, शेष अगले जन्मों के लिए रह जाते हैं. कोई संत मिल जाये और मेहरबान हो जाये तो उसकी दुआ से कर्म भार हल्का हो जाता है और आसानी से कट जाता है.

हम सब दुनियां में फंसे हुए हैं इसलिए इस हालत में जो दुआ की जाती है उसका ज़्यादा असर नहीं होता. इस तरह से यानि मन को साफ़ करके जो दुआ की जाती है उसका असर ज़्यादा होता है. जो लोग इन्द्रियों में फंसे हैं और दिखाने के लिए ईश्वर से दुआ कर रहे हैं तो उनकी प्रार्थना का असर ज़्यादा नहीं होता.

दूसरी बात यह है कि जिन चीज़ों के लिए हम दुआ कर रहे हैं वे चीज़ें यदि दुनिया के पदार्थ हैं तो वे आपको उतने ही मिलेंगे जितनी आपके पिछले जन्म की कमाई है. इससे ज़्यादा नहीं मिलेंगे, और अगर ईश्वर

की दया उमड़े भी और वे चीज़ें जो आप चाहते हैं आपको मिल जाएँ (जैसे धन-दौलत, किसी सांसारिक व्यक्ति का प्रेम कीर्ति आदि) तो क्या यह आपके ऊपर ईश्वर की कृपा होगी या उसका आपके साथ ज़ुल्म होगा ? क्योकि जितनी ज़्यादा चीज़ें ईश्वर आपको बख्शता है उतनी ही आपकी इच्छाएं मोटी होती हैं और उतना ही ज़्यादा आप उनमें फंसते हैं. फिर एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छाओं का अम्बार लग जाता है. मन कहता है कि " यह और मिल जाये ". इस तरह से तो आपका कभी भी छुटकारा नहीं होगा. तो ईश्वर ऐसी दुआ को कभी नहीं सुनता. हाँ , जब आप दुनियावी निचली इच्छाओं को छोड़कर ऊंची, यानी उसके प्रेम के लिए दुआ करते हैं, तब वह आपकी दुआ को सुनता है. आपकी जो कठिनाईयां और मुश्किलें उसके रास्ते में होती हैं उन्हें वह दूर कर देता है.

वह तो हमारा दयालु बाप है. जैसे, कोई माँ है, उसका बच्चा अनजान है और वह चाकू मांगता है, तो क्या वह माँ उसको छुरी दे देगी ? वह जानती है कि इससे बच्चा काट लेगा. लेकिन अगर बच्चा मिठाई के लिए ज़िद करता है तो वह उसे खाने के लिए मिठाई दे देगी. ईश्वर तो सच्चा बाप है और ऐसा प्यारा बाप है कि अगर उससे आप ऐसी चीज़ें मांगेंगे जिनसे आपका भविष्य ख़राब होगा तो वह ऐसी चीज़ आपको नहीं देगा. हम अज्ञान में फंसे हुए हैं. हम नहीं जानते कि हमारा भविष्य किस तरह सुखमय होगा. जो चीज़ हमको अच्छी लगती है हम तो उसी की इच्छा करते हैं चाहें उससे हमारा भविष्य बिलकुल सत्यनाश हो जाय. गुरु कृपा और सत्संग से जब हमारी बुद्धि शुद्ध होने लगती है और हमें होश आने लगता है यानी जब हमारा अज्ञान दूर हो जाता है तब हम पछताते हैं की हाय ! मैं कैसी बुरी हालत में था ? हम सोचने लगते हैं की मैं जो चीज़ भगवान से मांग रहा था उससे तो मेरा ढेर हो जाता, अच्छा हुआ जो वह चीज़ मुझे नहीं मिली.

ईश्वर सब जानता है कि हमारे पिछले जन्म के कर्म कैसे हैं और आगे के लिए वह हमें क्या दे जिससे हमारी हानि भी न हो और हमारा भविष्य उज्जवल हो. इसी वास्ते संत कहते हैं कि तुम्हारी जो बुद्धि है वह मलिन बुद्धि है. तुम जिस चीज़ में फंसे हो उसी में अपना फायदा समझते हो हालांकि वह तुम्हें नुकसान देने वाली है. ईश्वर इसको खूब समझता है और वह ऐसी कार्यवाही करता है जिसके करने से, और उसने हमें ऐसी जगह रखा है जहाँ रहने से, हमारे पिछले संस्कार भी कट जाएँ और आगे को हमारा भविष्य बेहतर होता चला जाय. अच्छा होना यह है कि सुख के धाम की तरफ, जहाँ आनंद ही आनंद है, उस तरफ हमारा रुख़ (झुकाव) हो जाय और हम उस रास्ते पर चलने लगें. उसने हमें ऐसी जगह रखा है और हमें ऐसी चीज़ें दी हैं जिसमें हमारा फायदा है. इसीलिए संत कहते हैं कि जिस हालत में भी ईश्वर ने रखा है उसी में खुश रहो , उसी हालत

से सहयोग करो - यानी 'राज़ी ब रज़ा" कि रवायत पर चलकर खुश रहो. इसी में तुम्हारा सबसे ज़्यादा फायदा है. जब मनुष्य की यह धारणा बन जाती है तो उसे मन की शांति मिलने लगती है.

आप दुनियां को नहीं बदल सकते. दुनियां में तो आपको पिछले संस्कारों के मुताबिक चीज़ें मिलेंगी. जो सजा है वह भी आपको मिलेगी. जो आपके लड़के-बाले रिश्तेदार वगैरा हैं, सब अपनी-अपनी तक़दीर और अपने -अपने संस्कार भोग रहे हैं. हमें परेशानी इसलिए होती है कि हमें ईश्वर ने जिस हालत में रखा है हम उसका विरोध करते हैं और उसको कर्स करते हैं, उसका विरोध करते हैं कि ईश्वर ने हमको ऐसी हालत में रखा है. दूसरी बात यह है कि हम संसार के या रिश्तेदारों, लड़कों , वगैरा के जीवन को अपनी इच्छा के अनुसार बदलना चाहते हैं. यांनी हम ख़ुद ख़ुदा बनना चाहते हैं. आप अपने लड़के को किसी विशेष विभाग में नौकरी दिलाना चाहते थे और आपके वह प्रयत्न असफल रहे और बाद में वह किसी और विभाग में गया तो अगर आप ग़ौर करके देखेंगे तो यह पाएंगे कि उसका भला इसी में था, जहाँ आप चाहते थे वहां नहीं. लेकिन आप यह समझते हैं कि हमारे से ज़्यादा बुद्धि किसी की नहीं है, यहाँ तक कि ईश्वर जिसने हमें बनाया है और इस संसार में रखा है उसकी भी हम आलोचना करते हैं. अपने को उससे ज़्यादा अक्लमंद समझते हैं. ऐसा तो ना-मुमकिन है, ऐसा तो हो ही नहीं सकता. इसी वास्ते हम दुर्दशा में हैं. अगर हम उस ईश्वर से सहयोग करने लगें और जिस हालत में उसने हमें रखा है, उसी में खुश रहें और यह समझे कि वह हमारा सच्चा बाप है, इसी में हमारी भलाई है.

पहली बात तो यह है कि ईश्वर है और अवश्य है. दूसरी यह कि हम यह समझें कि दरअसल वह हमारा सच्चा बाप है, सबसे प्यारा है वह सबसे ज़्यादा अक्लमंद है, वह हमसे वो सब काम करा रहा है जिसमें हमारा हित ही हित है. यदि आपको यह निश्चय हो जायेगा तो जिन हालतों में उसने आपको रखा है उसमें आप खुश रहेंगे और आपको मन की शांति मिलेगी. जब मन की शांति मिलेगी तभी आपका मन, आपका अभ्यास ऊपर की तरफ चलेगा. जिस वातावरण में इस समय हम रह रहे हैं अगर उसी में फंसे रहेंगे तो हम कभी भी इस माया जाल से नहीं निकल सकते. इसलिए जो सत्संगी भाई तरक़्क़ी करना चाहते हैं उनको यह चाहिए कि जिस हालत में भी ईश्वर ने उन्हें रखा है उस हालत में खुश रहें.

दुनियां में तरक़्क़ी तो हम कर रहे हैं कि हम बैरिस्टर हो गए या किसी और ऊंचे पद पर नौकर हो गए, और इच्छा यह है कि आगे और उन्नति करें. इसके लिए कोई और पढाई या कोर्स करना है जिसके वास्ते कॉलेज में नाम लिखा लिया है, और ईश्वर ने तुमको जो वेतन या रुपया दिया है उसमें से ज़्यादा हिस्सा उसी पढाई में

खर्च होता है, तो असंतोष कैसा ? अपना भविष्य बनाने के लिए अगर तुम रुपया दूसरी तरफ खर्च कर रहे हो और घर में तंगी हो रही है तो इससे परेशान क्यों हो ? ये तुम्हार वेवकूफी है या नहीं ? भाई, आप अपनी तरक़्क़ी के लिए ही तो कर रहे हो. आप अपनी आवश्यकताओं को क्यों बढ़ाये चले जा रहे हो ? हालाँकि वेतन काफी मिल रहा है और हमेशा आप रोते रहें, तो ऐसा आदमी क्या तरक़्क़ी करेगा ? हमने एक साहब को देखा जो केवल इण्टर या हाई स्कूल पास हैं. इस वक्त में सात सौ रूपये महीने पा रहे हैं. वो,पत्नी और एक बच्चा - इतना सा परिवार है . आज आठ- दस बरस हो गए, हमें उनसे मोहब्बत भी है, मगर आजतक जितनी चिट्ठियां आती हैं उनमें यही रोना होता है कि - ' हाय भाई साहब, पूरा खर्च किये जाता हूँ पर मेरा गुज़ारा ही नहीं होता, मैं तो मरा जाता हूँ .' अब बतलाइये कि क्या तुम ही रह गए हो कि ईश्वर सारी दुनियां का धन तुम्हीं को दे दे. अंग्रेजी तुमको लिखनी आती नहीं - हाई स्कूल पास लड़के क्या अंग्रेजी लिखेंगे ? और भी कोई खास लियाक़त तुममें है नहीं. कितनी बड़ी ईश्वर की कृपा है कि तुम्हें ग़ज़टेड आफीसर बना दिया और सात सौ या आठ सौ रूपये तुम्हे तनख्वाह मिलती है, लेकिन संतोष नहीं है, ईश्वर भले ही उनको सब कुछ दे दे लेकिन वो तो हमेशा उसकी शिकायत ही करते रहते हैं. ऐसा व्यक्ति परमार्थ पर क्या चल सकता है?

पहली चीज़ है कि संतोष हो, जिस हालत में हो उसी में खुश रहो - इसी में तुम्हारा भला है. अगर तरक़्क़ी करना चाहते हो और दूसरों को देख कर तुम्हारी भी तबियत करती है कि तुम भी रुपया-पैसा, शौहरत पैदा करो, तो तरक़्क़ी करने की कोशिश करो, मगर सहारा ईश्वर का लो. अगर कामयाबी हो जाती है, तो उसको धन्यवाद दो - 'हे ईश्वर! तेरी बड़ी कृपा है, और अगर कामयाबी नहीं होती तो भी ईश्वर को धन्यवाद दो - हे ईश्वर ! बड़ी कृपा है, न मालूम इस जगह पर पहुंचकर मुझे कितनी मुसीबत उठानी पड़ती. अपने बड़ी कृपा की जो मुझको सफलता नहीं दी. इस तरह से आपको संतुष्टि मिलेगी.

लेकिन हम अपने आप को कर्ता समझ कर जब कामयाबी नहीं होती है तो हम खुद को दोष देते हैं, या तक़दीर को, या ईश्वर को दोष देते हैं. यह तो असंतोष हुआ. जिस आदमी के मन में असंतोष है क्या वह कभी सुखी रह सकेगा? कभी नहीं. कितने ही हालात बदल जाएँ, दुनिया की कितनी ही चीज़ें उसको मिल जाएँ, लेकिन उसको कभी भी तृप्ति नहीं होगी. तृप्ति दुनियां की चीज़ों में नहीं है, वह तो अपने दिल में है. एक शख्स को पचास रूपये महीने मिलते हैं, वह संतुष्ट है, एक को पाँच सौ रूपये महीने मिलते हैं, पर फिर भी वह संतुष्ट नहीं है .

यह तो मन की बीमारी है, इसे दूर करो. जिस हालत में ईश्वर ने रखा है उसमें खुश रहो, तभी कुछ तरक़्क़ी कर सकते हो, मन के स्थान से ऊपर उठ कर आत्मा के स्थान पर आ सकते हो. जो व्यक्ति इन्द्रियभोग में फंसा है, हर वक्त उसी के सोच-विचार में फंसा रहता है, उसी की जुगाली करता है, क्या वह कभी भी समझदार, विवेकशील बन सकता है? कभी नहीं. उसकी तो सुरत निचली वासनाओं में जकड़ी हुई है. दिन-रात उसी ख्याल में डूबा हुआ विषय-भोग का आनंद लेता है और बाद में भी उसी को सोचता रहता है. ऐसा आदमी तो मनुष्य रूप में पशु की हैसियत में गिरता चला जाता है. अगर मनुष्य जीवन में उसकी यह हविश पूरी नहीं हुई और वह निचली वासनाओं में फंसता गया तो ख्वाहिश तो उसकी पूरी होगी लेकिन किसी निकृष्ठ योनि में. उस योनि में जाओ और उसको भोगो. वहां से जब उसकी तृप्ति हो चुकेगी तब फिर मनुष्य चोला मिलेगा. मन की चाहों में बहने वालों का यही हाल होता है.

सौदागर लोग तो हर चीज़ की नयी से नयी डिज़ायनें लाकर रखते हैं. बाजार गए, उस पर निगाह पड़ी, लेने गए थे सब्ज़ी , लेकिन मन को नहीं रोक सके और एक सुन्दर सा लैंप जो दुकान में देखा, मन मोहित हो गया, सब्ज़ी भूल गए और लैंप ले आये. घर में पहले से ही एक लैंप मौजूद है लेकिन आकर्षण-वश दूसरा ले आये. यह सब अनावश्यक खर्च किया और फिर रोते हैं कि हाय, हमारा खर्च पूरा नहीं होता. इसके ज़िम्मेदार तो तुम खुद हो.

हमारे गुरुदेव एक दिन कहने लगे - "श्रीकृष्ण, देखो तुम्हें एक गुर बताते हैं. अगर तुम दुनियां में खुश रहना चाहते हो तो अपनी इच्छाओं को कम करते चले जाओ. अगर एक या दो जूते मौजूद हैं तो तीसरा कभी मत खरीदो. अगर

दो-तीन सूट मौजूद हैं तो चौथा, पांचवां कभी मत बनवाओ. तुम खुद भी खुश रहोगे और दूसरों की मदद भी करते रहोगे. और जो तुमने अपनी इच्छाओं को बढ़ा कर अपनी ज़िंदगी खर्चीली बना ली तो खुद भी दुखी रहोगे और सारे परिवार को दुंखी करोगे, उनकी ज़रूरतों को पूरी नहीं कर सकोगे. दूसरी नसीहत उन्होंने यह दी कि जो व्यक्ति तुमसे नसीहत न मांगे, उसको कभी नसीहत मत दो. ज़ाहिरदारी में यह बात गलत सी लगती है. शेख सादी कहते हैं : " अगर बीना कि नाबीना व चाह अस्त, वगर ख़ामोश बिनशीनम गुनाह अस्त " - अर्थात अगर देखें कि अन्धा व्यक्ति जा रहा है और सामने कुआँ है तो चुप रहना और उसे रास्ता न बताना पाप है. मगर हमारे गुरुदेव (महात्मा रामचंद्र जी) ने तो इसके खिलाफ कहा है पर हमने उसको आज़माया है और बिलकुल ठीक पाया.

आप ज़बरदस्ती किसी की भलाई के लिए कुछ कहिये तो वह उसे नहीं मानेगा बल्कि उसके खिलाफ चलेगा और अपना नुक़सान करेगा. जब वह आपसे राय मांगे और आप उसे राय देंगे तब उसे वह मानेगा और उसकी क़दर करेगा. वह चाहे हमारा बेटा भी हो, इशारा दे दें, कभी ज़बरदस्ती न करें वर्ना वह कभी वैसा नहीं कर सकेगा. यह दुनिया का एक अजीब कायदा है कि आप बड़ी मौहब्बत से, उसकी भलाई के लिए, किसी को कोई चीज़ बताएं मगर वह यह समझता है कि इन्हें क्या पड़ी है, ज़रूर इनका कोई न कोई मतलब है जो यह ऐसी बात कर रहे हैं क्योकि दुनियां में सब मतलब से ही काम कराते हैं. आप कितना भी निस्वार्थ होकर उसे समझाएं लेकिन वह यही समझेगा कि इसमें तो आपका ही कोई स्वार्थ होगा. मेरा तो यह तज़ुर्बा है.

आप चाहें तो इसका तज़ुर्बा करके देख लें कि जितनी आप अपनी ज़िंदगी खर्चीली बनायेगे, उतने ही आप दुखी रहेंगे. आजकल महगांई बहुत बढ़ रही है और हर आदमी उससे तंग है लेकिन आप खुद सोचकर देखिये कि क्या हम भी इसके ज़िम्मेदार नहीं हैं ? हमने भी अपने जीवन को खर्चीला बना लिया है. हम यह चाहते हैं कि जिन चीज़ों की ज़रूरत नहीं है, जो घर में मौजूद हैं, उनका भी अम्बार लगा रहे. विलासता की वस्तुएं हमारी प्रति दिन की आवश्यकता की वस्तुओं में तब्दील होती जा रही हैं. जहाँ यह हाल है वहां मॅहगाई तो बढ़ेगी ही. हम इसके बिना नहीं रह सकते. खर्च जब बढ़ता है तो हम तंग होते हैं. फिर भला-बुरा कहते हैं लेकिन अपने आप को नहीं. इस काम के लिए बेचारा ईश्वर ही रह गया है.

अपनी आँख का तिल तो नहीं दीखता और दूसरों की आँख में गिरा हुआ छोटा तिनका भी दीख जाता है. अपना नुख़्स किसी को नहीं दीखता, दूसरे का छोटा सा दोष भी फ़ौरन दीख जाता है. यह मनुष्य का स्वभाव है. हम ईश्वर में भी दोष देखते हैं, उसे अन्यायी बताते हैं. ईश्वर तो रहीम करीम है, और यही नहीं वह तो बड़ा प्यारा बाप है, जो हमेशा दयालु है. अगर हमारे कर्मों को देखकर कि हम क्या-क्या कुकर्म कर रहे हैं, वह हमें सज़ा दे तो क्या हम दुनियां में रहने के लायक़ हैं? न जाने हमारी क्या दुर्दशा हो? वह माफ़ करता चला जाता है और हम हैं कि उसी को दोषी ठहराते चले जाते हैं - अपने आप को और अपने कर्मों को नहीं देखते.

यह हीन हालत सब तुम्हारे अपने कर्मों का नतीज़ा है. जितना तुमने किया उतना तुम्हें मिल रहा है. कोई चीज़ इस दुनियां में ऐसी नहीं है जो बिना क़ीमत के मिल जाए. जितनी क़ीमत देते जाओगे, उतनी चीज़ मिलती जाएगी. क़ीमत तो तुम देना नहीं चाहते और यह चाहो कि सारी दुनियां तुम्हें मिल जाए - ऐसा तो होगा नहीं. वहां तो इंसाफ है, जितना तुमने किया है उतना ही तुम्हें मिल रहा है. यह सब तुम्हारे कर्मों का ही फल है - चाहे

अच्छे या बुरे. हर हालत को सब्र से बर्दाश्त करना चाहिए. तभी तुम्हारा मन मुक्त होगा और आत्मा का अनुभव कर सकेगा .

माया ने यह शरीर बनाया, इन्द्रियां व मन बना दिया . यह काया मिटटी (पंच-तत्व) की बनी हुई है. जितनी भौतिक चीज़ें हैं वो भी ऐसी ही बनी हैं, उन पर मुलम्मा चढ़ा है (वे आकर्षक हैं) और उन्ही की वासनाएं हमारे अन्दर भर दीं हैं. उन वासनाओं को पूरा करने के लिए हम उन चीज़ों से लिप्त हो जाते हैं. यही मन और माया का जाल है. आत्मा का किसी को पता भी नहीं. वह अन्दर दबी पड़ी है, इसलिए यदि हमें सब भौतिक चीज़ें मिल भी जाएँ फिर भी हम सुखी नहीं रह सकते क्योकि हमारी आत्मा अशांत है, उसको जगाओ.

वासनाओं को उतना भोगो जितना ज़रूरी है, यह नहीं कि उनको छोड़ दो, क्योकि जब तक भोगोगे नहीं तब तक मन वहीँ लगा रहेगा. इसका यह मतलब भी नहीं कि वासनाओं में फंसे रहो. भोगो तो, मगर धर्मशास्त्र के मुताबिक भोगो. इस तरह भोगने से आप भोग भी लेंगे और इन्द्रियों की तृप्ति भी हो जाएगी. जैसे काम-वासना, सब इसमें फंसे हुए हैं. लेकिन उसका सही इस्तेमाल क्या है ? आपकी स्त्री और उसका संग भी धर्मशास्त्रों के अनुसार करो. अगर आपने उसको अधर्म के साथ भोगा, एक शादी की, दूसरी की, फिर तीसरी की, तो यह ख्वाहिश तो और बढ़ती चली जाएगी.

मन जिस चीज़ को ज़्यादा भोगता है, उससे वहां उसकी जड़ मज़बूत होती चली जाती है. अधर्म से भोगने में वह उस चीज़ का ऐसा आदी हो जायेगा कि वह जानवर की दशा में चला जायेगा. तो भोगा भी नहीं, यानी भोग की तृप्ति भी नहीं हुई, और तबाह हो गए . धर्म के अनुसार भोगने से आप उस भोग से उपराम हो जायेंगे, और जब उपराम हो जायेंगे तो आपकी सुरत नीचे से मुक्त हो जाएगी. तब आप मन के स्थान से उठकर आत्मा के स्थान पर आ सकते हैं.

इसी वजह से कहा गया है कि ईश्वर से मांगो तो उसका प्रेम मांगो, न कि दुनियावी माया में फंसाने वाली चीज़ें, और जो कुछ उसने दिया है उसी में संतोष करके हर हाल में खुश रहना सीखो. ईश्वर आपका कल्याण करें .

राम सन्देश : जून १९९४